लोमरडेन (जर्मनी)
मई १८, १९९९

सन्देश संख्या ४

उपनिषद् – सार

जब तक ''परावस्था'' की झलक नहीं मिलती है तब तक जन्म और मृत्यु के चक्र से बाहर आने का कोई मार्ग नहीं है। कोई अन्य पथ नहीं है, कोई अन्य पथ नहीं है, कोई अन्य पथ नहीं है।

प्रज्ञा की विपुल दीप्ति से युक्त एक अद्भुत मंगलमय शक्ति है जो ब्रह्माण्ड के प्रत्येक सूक्ष्म वस्तु को आवृत्त किये हुए है। जब तक इस सच्चाई का उद्‌बोधन नहीं होता है, कोई जन्म और मृत्यु के चक्र से बाहर नहीं आ सकता है। मुक्ति के लिए कोई अन्य पथ नहीं है, कोई अन्य पथ नहीं है, कोई अन्य पथ नहीं है।

मन रूपी उपकरण के आयाम के अन्दर अज्ञेय ज्ञेय नहीं हो सकता है। जब तक तड़ित के झटके के आघात की तरह इस यथार्थ का एहसास नहीं होता है तब तक अपनी आत्मकेन्द्रित गतिविधियों को रोका नहीं जा सकता है एवं जन्म–मृत्यु के चक्र से मुक्ति नहीं पाई जा सकती है। इसके लिए कोई अन्य पथ नहीं है, कोई अन्य पथ नहीं है, कोई अन्य पथ नहीं है।